IAS Mentorship

With Reyasat Ali sir & Experienced team in CSE prep

CSE Main 2023: Mini Mock Test 4

Syllabus:	• • Art & Culture • •	
Name of Candidate	MOHAN MANGAWA	
Email Id		
Date		Medium: Hindi / English
Time: 1 Hour	Start Time:	End Time:

Q. No.	Max. Marks	Marks obtained
1	10	
2	10	
3	10	
4	15	
5	15	
6	15	
7	15	
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
Total	90	
Invigilator	Signature	

WhatsApp/Telegram/Text/Call: 8090528260

IAS Mentorship

By Reyasat Ali & Team | 8090528260 Telegram WhatsApp Call

Q1. Periods of The Chalukyas of Gujrat, The Paramara of Malawa and The Ganga of Karnataka rulers were the most significance phases in the history of Jainism before its decline. Enumerate 150 words

गुप्त काल की समाप्ति के बाद व मध्यकालीन प्रारंभ के साथ जैन धर्म के महत्व में पुनरुत्थान देखा जाता है जो मुख्यतः पश्चिमी-दक्षिणी भारत में परिलक्षित होता है।

जैन धर्म को योगदान

चालुक्य वंश द्वारा

→ जैन धर्म को राजकीय संरक्षण

→ साहित्य के क्षेत्र में कई नॉन-कैनोनिकल ग्रन्थ रचना

→ वास्तुकला → भीम II → दिलवाड़ा जैन मंदिर (माउंट आबू)

→ कुमारपाल → मुलावस्तिका मंदिर (श्वेतांबर)

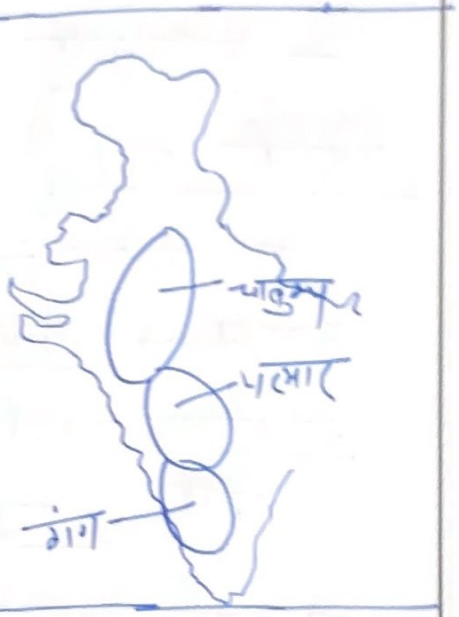

परमार वंश द्वारा → मुख्यतः हिंदू - शैव धर्म का परिपालन परन्तु जैन धर्म संरक्षण का भी → मुख्यतः वास्तुकला क्षेत्र

↳ वल्लभेश्वर मंदिर

→ उदयपुर शहर में कई छोटे जैन मंदिर को आर्थिक सहायता।

→ सहिष्णुता व संरक्षण द्वारा योगदान

पश्चिमी गंग → कर्नाटक क्षेत्र में साहित्यिक व मंदिर कला द्वारा जैन धर्म को अवदान → पंचकूट बसदि, पांडुरंग मंदिर

साहित्यिक कार्य में - जिनसेन जैन गुरु द्वारा आदिपुराण - महापुराण की रचना

→ कन्नड साहित्य के जैन क्लासिक पंपा - पोन्ना - रन्ना भी इसी काल में।

इस प्रकार आरंभिक वास्तुशास्त्रीय व राजकीय संरक्षण योगदान ने जैन धर्म के अस्तित्व हेतु नव-ऊर्जा प्रदान की जो वर्तमान में भी स्फूर्त है।

Q2. Discus the contribution of Raja Ravi Verma to Indian Art, who is also known as the Father of modern Indian art. 150 words

राजा रवि वर्मा 18वीं शताब्दी के सबसे महान भारतीय चित्रकार रहे जिनके योगदान के कारण 1902 में लार्ड कर्जन द्वारा इन्हें 'कैसर-ए-हिन्द' उपाधि द्वारा नवाजा गया।

योगदान

① कला-क्षेत्र में
- → 7000 से अधिक पेंटिंग
- → धर्मनिरपेक्ष चित्रकारी की शुरुआत
- → प्राचीन पौराणिक व मिथकीय खंडों का चित्रण → शकुंतला - दुष्यन्त मिलाप
- → जातिय-पदानुक्रम को तोड़ते हुए अपनी चित्रकारी में निम्न वर्ग का भी चित्रण
- → पाश्चिमी वास्तविकतावादी चित्रकारी को भारतीय सौंदर्यशास्त्रीय चित्रों से जोड़ा
- → तेल चित्रकला (लिथोग्राफिक) की शुरुआत की

स्वतंत्रता संग्राम।

↳ आरंभिक राष्ट्रवाद जगाने हेतु प्राचीन चित्रों का अंकन → भारत का माता के रूप में प्रारंभिक रूपांतरण।

↳ भारतीय अस्मिता व सांस्कृतिक पहचान का चित्रण → तिलक के गणपति दर्शन व उत्सव को दिशा दिखायी

↳ महाराष्ट्र में प्लेग के समय जमीनी स्तर पर कार्य → आर्थिक सहायता

↳ मलयालम और उत्तर भारतीय संस्कृतियों का आरंभिक एकीकरण।

इस प्रकार राजा रवि वर्मा ने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व द्वारा नवजागरण को एक नई दिशा प्रदान की व भारतीय कला-साहित्य को नई पीढ़ी में सुदृढ़ कर छोड़ा।

Q3. Evaluate the nature of the Sufi Movement and its contribution to Indian culture. Also explain how Sufism is relevant in India in the present times? 150 words

सूफी आंदोलन से तात्पर्य मुस्लिम विचारधाराओं का उदारवादी नज़रिया है जो इश्क-हकीकी व इश्क मजाजी जैसे रूपों के द्वारा खुदा-बंदे का एकाकार में विश्वास करता है।

सूफी आंदोलन की प्रकृति

- उदारवादी व नवीन विचारों का समागम
- भारतीय संस्कृति के साथ एकाकार
  - योग, संगीत को अपनाया
- प्राचीन भारतीय धर्मों के अच्छे विचारों को ग्रहण → सहिष्णुता व भाईचारे पर जोर।

सूफी आंदोलन का योगदान

- तत्कालीन सांप्रदायिक दंगों को शांत करने में भूमिका → हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल

↳ धार्मिक आडंबरों पर चोट
↳ नये विचारों का समामेलन → ईश्वर पूजा व परंपरा में उदारता
↳ भक्ति आंदोलन के इस रूप को मजबूत किया। ⇒ कबीर, नानक, दादू के विचारों को ग्रहण किया।
↳ व्यापक सामाजिक - धार्मिक सुधार कार्यक्रम के रूप में ⇒ चिश्ती सिलसिले द्वारा मुस्लिम कट्टरता का विरोध।

वर्तमान में प्रासंगिकता

↳ बढ़ता इस्लामोफोबिया को दूर करने में ⇒ नैतिकता व सहिष्णुता पर चोट कर इस्लाम की वैज्ञानिक व तार्किक सिद्धान्तों को पेश करके ⇒ धार्मिक सुधार, बढ़ती कट्टरता पर अंकुश
↳ विविधतापूर्ण समाज में प्रेम-धारा बहाव हेतु आज सूफी धारा की जरूरत

इस प्रकार सूफी आंदोलन ने उस समय इस्लाम को उदारवादी बनाया जब वह अन्य संस्कृतियों के साथ टकराव की स्थिति में था।

Q4. As Gautam Buddha was the first diplomat of peace, his teachings of peace, cooperation and Buddhist literature in the present tough time can become the guiding light for the Indian diplomacy on the world stage. Comment 150 words

वैश्विक युद्ध संकट और बढ़ती आतंकी गतिविधियों ने महात्मा बुद्ध के शांति व सर्व धर्म समभाव भावना की प्रासंगिकता को एक बार पुनः परिभाषित किया है।

महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं –

↳ आत्मदीपो भवः का भाव

↳ अहिंसा व आत्मिक शांति पर बल

↳ अपरिग्रह व अस्तेय के साथ सहयोगात्मक नजरिये पर बल

↳ त्रिपिटक → सुत, विनय, अभिधम्म
व्यक्ति, समाज, देश काल के आचरण को नैतिकता की कोटि पर निर्धारण

↳ त्रिरत्न → बुद्ध, धम्म, संघ के शरण

वैचारिक शुद्धता को लेकर चेतावनी।

भारतीय दृष्टि के लिए प्रकाशपुंज के रूप में - कैसे

↳ वैश्विक शांति की पहल → G20, UNSC का सदस्य होने के नाते जिम्मेदारी

↳ सॉफ्ट डिप्लोमेसी का प्रयोग कर कैसे आर्थिक - सामाजिक गरीबी हेतु कार्य

↳ भारत द्वारा कोरोना काल में वैक्सीन सप्लाई, अफ्रीकी देशों को अनाज उपलब्धता

↳ स्त्री स्वतंत्रता व समानता हेतु बुद्ध के धम्म नीति का परिपालन

↳ महिला प्रतिनिधित्व व समावेशन पर बल द्वारा

↳ UN में भारतीय प्रतिनिधि स्वयं महिला ही → स्वचिरा कंबोज

↳ भारत की पड़ोसी देशों के साथ मित्रता वार्ता व संकट के समय सबसे पहले सहायता ⇒ बुद्ध की सर्वसुलभता सिद्धांत की पालना

↳ वैश्विक इंजन के रूप में उभरता भारत बुद्ध के प्रत्युत्पन्नसमुत्पाद सिद्धांत का पालन कर रहा है ⇒ विनाश से ज्यादा विनिर्माण पर जोर → मेक इन इंडिया

↳ वैश्विक बंजरता, आतंकवाद व बढ़ते जलवायु परिवर्तन का सामना करने हेतु बुद्ध का आष्टांगिक मार्ग प्रयोग बेहतर विश्व जो आत्मीय शुद्धता पर बल देता है।

इस प्रकार महात्मा बुद्ध के वैचारिक प्रयोग वर्तमान वैश्विक दशा को बदलने और एक सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने में प्रभावी भूमिका निभायेंगे जो SDG लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सबसे जरूरी है।

Q.5 Evaluate the Mughal Period in terms its contribution in the field of art, literature and architecture. 250 words

मुगल काल मध्यकालीन इतिहास का राजनीतिक - सामाजिक - सांस्कृतिक व कला क्षेत्रों की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण रहा है जो बाबर द्वारा रखी अगर्इ नींव की परिणति औरंगजेब काल तक प्राप्त करता है

① कला क्षेत्र में

चित्रकला → जहांगीर के काल में अपनी पराकाष्ठा पर → पेंसिल प्रयोग चित्र प्रसिद्ध
→ मुगल दरबारी चित्रों की अधिकता
↳ धर्मनिरपेक्ष, प्राकृतिक चित्रण
↳ अकबर द्वारा अलग से चित्रशाला का निर्माण → मनवर-ए-सुहेली
↳ इस्लामिक उदारवाद की छाप → जो मनुष्य चित्र बनाने को भी स्वीकारती है
↳ मीर सैयद अली, अब्दुस समद व बसावन मुख्य

संगीत कला | → हिन्दुस्तानी संगीत का फारसी के कव्वाली से मिलन

↳ सरोद व सितार प्रयोग पर जोर

↳ संगीत घरानों का विकास

नृत्य | → कत्थक नृत्य का मुख्यतः हिन्दुस्तानी के साथ समागम

↳ नृत्य को राजकीय आश्रय प्राप्ति

↳ लोक नृत्य → भाङना, मॉन्च आदि का भी उद्गम इसी काल में।

② साहित्य | → मुख्यतः जीवनी लिखने का चलन

↳ तुजुक-ए-बाबरी, अकबरनामा आदि

↳ राजकीय भाषा फारसी परन्तु उर्दू व हिन्दी का भी विकास → दारा शिकोह द्वारा उर्दू उपनिषदों का अनुवाद

↳ राजकीय दैनिक कार्य, आर्थिक-राजनीतिक

सामाजिक ताने-बाने का चित्रण साहित्य द्वारा
↳ मिन्हाज-उस-सिराज, अबुल फजल का अकबरनामा

(3) वास्तुकला → वास्तुकला का स्वर्ण काल
↳ हुमायूँ द्वारा → कश्मीर बाग व चारबाग शैली का प्रादुर्भाव
↳ अकबर → बुलंद दरवाजा, फतेहपुर सीकरी, आगरा किला, पंचमहल आदि।
↳ शाहजहाँ → ताज महल, लाल किला, दिल्ली की जामा मस्जिद।

वास्तुकला विशेषताएँ
↳ लिंटल शहतीर की जगह मेहराबदार शैली
↳ आरचस व पित्रा-दुरा प्रयोग
↳ अकबर द्वारा लाल-बलुआ पत्थर जबकि शाहजहाँ-जहाँगीर द्वारा संगमरमर।
↳ चारबाग व मीनार उपस्थिति अद्वितीय।

इस प्रकार हर क्षेत्र में मुगल काल अपने परवर्ती कालों से आगे रहा तथा आने वाले ब्रिटिश काल में भी इतनी कला-क्षेत्र प्रगति नहीं दे पाई जो एक महत्वपूर्ण योगदान है।

Q6. Elaborate on the Mauryan Empire periods contributions to the Indian Art and Architecture and their significance. 250 words

मैगस्थनीज (ग्रीक राजदूत) की 'इंडिका' पुस्तक के अनुसार मौर्य काल की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति के साथ ही इसके कला-क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण गति देखी गई जो परवर्ती कालों तक अपना प्रभाव छोड़ती है।

कला क्षेत्र में योगदान

भित्ति चित्रकारी → भीमबेटका व उड़ीसा के कलाहांडी क्षेत्रों में कई प्रस्तर चित्रकारियाँ।

विशेषताएं → तत्कालीन समाज का चित्रण
↳ धार्मिक अनुष्ठान व बौद्ध-जैन धर्म का उत्थान चित्रण प्रमुख → धनीशगढ़ का गुंडाहांडी में शैल चित्रकला।
↳ महिलाओं व दासों की स्थिति का ज्ञान।

साहित्यिक → चाणक्य की 'अर्थशास्त्र'
↳ मेगस्थनीज की इंडिका
↳ जैन व बुद्धों के नॉन-कैनोनिकल साहित्य।
↳ तृतीय बौद्ध संगीति पाटलिपुत्र में अभिधम्मपिटक की रचना
↳ जातक साहित्य → बुद्ध संबंधी पौराणिक कथा साहित्य।

वास्तुकला अवदान

(1) गुफा वास्तुकला → नागार्जुनी व बाराबर गुफा
↳ विहार व चैत्य निर्माण
↓ रहवास ↓ धार्मिक पूजा हेतु

(2) स्तंभ & शिलालेख।
↳ राजकीय आदेशों का अंकन
↳ अशोक के धार्मिक नैतिकता संबंधी विचारों का अंकन

↳ सारनाथ स्तंभ में वृषभ (शेर) शक्ति के साथ संयम का प्रदर्शन

↳ प्रत्येक स्तंभ पर एक जानवर की उपस्थिति - बैल, शेर, घोड़ा आदि।

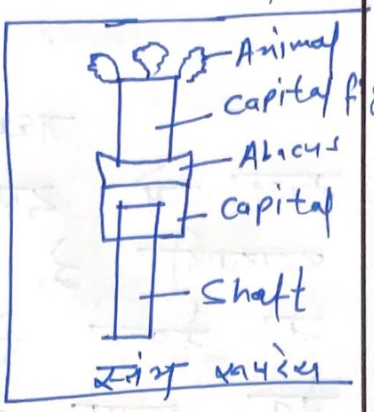

(3) • **स्तूप** → बुद्ध के पार्थिव अंगों के संरक्षण हेतु बनाया गया टीलानुमा आकृति की संरचना

→ मुख्यतः पत्थर से निर्माण

→ धार्मिक स्थलों के रूप में प्रसिद्धि - कोर्ले का चैत्य

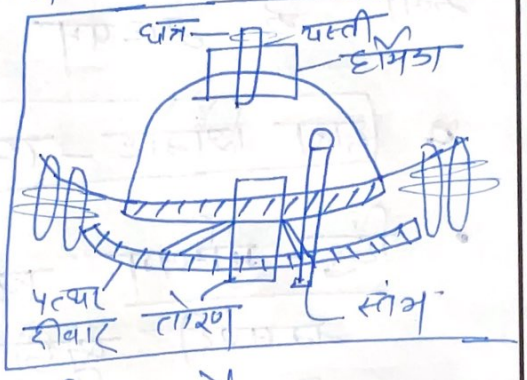

इस प्रकार प्राचीन काल में मौर्य काल कला के क्षेत्र में महान युग साबित हुआ जिसने संरचनागत निर्माण को पहली बार यथार्थता प्रदान की।

Q7. Dara Shikoh effort to find commonalities between Hindu and Islamic traditions did not have long-reaching impact. However, magnitude of his devotion to finding similarity and urging those of his faith to understand the two faiths intersect and contain methods to understand each other has great significance in Indian History. Discuss 250 words

मध्यकालीन धार्मिक कट्टरता के काल में दारा शिकोह एक ऐसे धार्मिक उदारवादी के रूप में प्रस्तुत हुए जिन्होंने न केवल दो संस्कृतियों को मिलाने हेतु प्रयास किए बल्कि सहिष्णुता हेतु कई व्यक्तिगत प्रयास अपनी साहित्यिक कला के माध्यम से किए।

दारा शिकोह – एक उदार मुसलमान राजा

- हिंदु-मुस्लिम एकता का संदेश → नक्सबंदी सूफी सिलसिले का समर्थन करके।
- प्राचीन हिंदु ग्रन्थों उपनिषद, गीता, पुराण आदि का फारसी में अनुवाद 'मज्म-उल-बहरीन' नाम से।

- औरंगजेब की कट्टरवादी नीतियों का विरोध किया व कट्टर शाहजहाँ को एक सहिष्णु-प्रेमी राजा के रूप में बदला।
- सिक्खों के सातवें गुरु हरराय के साथ संवाद स्थापना ⇒ अर्जुनदेव के काल से चली आ रही खटास को कम किया।

परन्तु इन हलों के बावजूद दीर्घकालिक प्रभाव नहीं पड़ पाये

↳ औरंगजेब का कट्टरवादी नज़रिया
  ↳ इस्लाम की तीखी व्याख्या
  ↳ बुतशिकन कार्य → मंदिरों का नरसंहार
  ↳ जाटों, राजपूतों से युद्ध एवं धार्मिक युद्धों में बदला

↳ दारा शिकोह की जल्दी मृत्यु → 1659 ई०

दारा शिकोह का योगदान

- जो कार्य सूफीवाद नहीं कर पाया उसे दारा द्वारा अभिजात स्तर पर → दो धर्मों का आत्मिक मिलन कराया।
- धर्मांतरण व डर के माहौल की बजाय बेहतर रुझान के रूप में सभी पक्षों को समर्थन
- जजिया से समाप्ति, हिंदुओं पर मंदिर निर्माण प्रतिबंधों को हटाकर एक सहिष्णु माहौल निर्माण।

इस प्रकार दो संस्कृतियों के मिलन का कार्य व आपसी गलतफहमियों की भावना के विनाश हेतु दारा शिकोह का योगदान भारतीय इतिहास में अमूल्य है।